بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 23
Issue - 11

राह-ए-ईमान

नवम्बर
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (गुनाह से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?).....4
5. सम्पादकीय (धर्मों के बीच सद्भाव के उपाय).....6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 15-10-2021).....8
7. ज़िक्रे इलाही (अर्थात अल्लाह को याद करना और उसका नाम जपना).....12
8. ख़ुद्दाम के नाम हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अ. का पैग़ाम.....17
9. कुछ अज्ञानियों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर.....19

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿۱﴾ قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۲﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۳﴾ لَمۡ يَلِدۡ ۙ
وَ لَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ﴿۴﴾ وَ لَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ﴿۵﴾ (सूरह इखलास आयत- 1-5)

अनुवाद:- अल्लाह के नाम के साथ जो रहमान और रहीम है। तू कह दे कि वह अल्लाह एक ही है। अल्लाह निस्पृह (स्वच्छंद) है। न उस ने किसी को जन्म दिया और न ही वह किसी से जन्मा है और न ही कभी कोई उसके समान हुआ है।

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद:- हज़रत अबु हुरैरह (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला फरमाता है मेरा बन्दा मेरा इन्कार करता है हालांकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। वह मुझे गाली देता है हालांकि उसे ऐसा करने का अधिकार नहीं था। मेरा इन्कार करने का अर्थ यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला फिर हमें इस तरह पैदा नहीं कर सकता जिस तरह उसने हमें पहले पैदा किया है, और मुझे गाली देने का अर्थ यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला ने किसी को अपना बेटा बना लिया है हालांकि मेरी ज़ात समद (अर्थात नि:स्पृह, स्वच्छंद) है और न मेरा कोई बेटा है और न मैं पैदा किया गया हूँ अर्थात् न किसी का बेटा हूँ और न ही कोई मेरे बराबर हो सकता है।" (मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 317)

अनुवाद:- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कहा अल्लाह तआला ने आदम को अपने रूप पर बनाया है। अर्थात् इंसान अल्लाह तआला की विशेषताओं का सूचक बनने की क्षमता रखता है और यह क्षमता है कि वह अल्लाह तआला की विशेषताओं को प्रतिरूपी तौर पर अपना सके। (मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 323)

☆ ☆ ☆

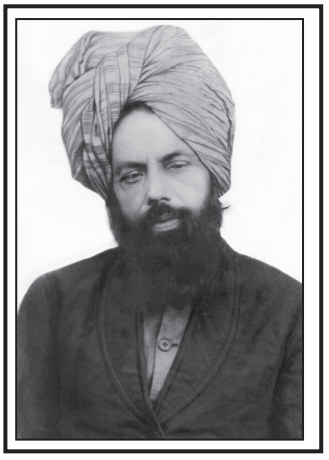

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

ख़ुदा की प्रसन्नता पाने का मार्ग

अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ की प्रशंसा में जो यह है फ़रमाया है कि-

لَوۡ اَنۡزَلۡنَا هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيۡتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنۡ خَشۡيَةِ اللّٰهِ (सूरह हश्र- 59/21)

इस आयत की व्याख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि:- एक तो इसके यह अर्थ हैं कि क़ुरआन शरीफ़ का ऐसा प्रभाव है कि अगर पहाड़ पर वह उतरता तो पहाड़ ख़ुदा के खौफ़ से टुकड़े-टुकड़े हो जाता और ज़मीन के साथ मिल जाता। जब बेजान चीज़ों पर इसका ऐसा प्रभाव है तो बड़े ही मूर्ख वे लोग हैं जो इसके प्रभाव से फ़ायदा नहीं उठाते, और इसके दूसरे अर्थ यह हैं कि कोई व्यक्ति उस समय तक ख़ुदा की प्रसन्नता और उसका प्यार प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसमें दो विशेषताएं न पैदा हो जाएं। प्रथम- अहंकार को तोड़ना, खड़े हुए पहाड़ के समान जो सिर ऊंचा किए हुए होता है, गिरकर ज़मीन से न लग जाए। इसी तरह इन्सान को चाहिए कि समस्त अहंकार और ऊंचा होने के विचार को दूर करे और विनीतता तथा विनम्रता को अपनाए, और द्वितीय यह कि पहले उसके सारे संबंध टूट जाएं जैसे कि पहाड़ गिर कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और ईंट से ईंट अलग हो जाती है। इसी तरह उसके वे पहले सारे संबंध टूट जाएं जो गंदगी और ख़ुदा को प्रकोप दिलाने का कारण थे। और अब मुलाक़ातें और मित्रताएं और मुहब्बतें और दुश्मनियां केवल ख़ुदा के लिए रह जाएं।"

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से मसीह मौऊद को सलाम

फरमाया:- हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो मसीह मौऊद को अस्सलामो अलैकुम कहा है उसमें एक बहुत बड़ी पेशगोई थी कि लोगों के घोर विरोध और उनके तरह-तरह के बुरे और क़त्ल के षड्यंत्रों के बावजूद वह सलामती में रहेगा और कामयाब होगा। हम कभी इस बात पर भरोसा और विश्वास नहीं कर सकते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह साधारण तौर से फ़रमाया है। हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्द-शब्द में रहस्य और गूढ़ताएं हैं।

(अल्हकम जिल्द-5, अंक-21, दिनांक 10 जून सन् 1901 ई., पृष्ठ 9)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

...दुर्भाग्यशाली है वह दिल जो ठण्डा पड़ा है और अभागा है वह स्वभाव जो शोकग्रस्त है और मुर्दा है वह अन्तरात्मा जिसमें चमक नहीं। तो तुम उस डोल से कम न रहो जो कुएं में खाली गिरता और भर कर निकलता है और उस छलनी की विशेषता ग्रहण न करो जिसमें कुछ भी पानी नहीं ठहर सकता, एक मार्ग से आता और दूसरे मार्ग से चला जाता हैं। कोशिश करो कि स्वस्थ हो जाओ और वह संसार की चाहत की तपन की ज़हरीली गर्मी दूर हो जाए जिसके कारण न आंखों में रोशनी है न कान अच्छी तरह से सुन सकते हैं न जीभ का स्वाद ठीक है न हाथों में ज़ोर और न पैरों में शक्ति है। एक सम्बन्ध को काटो ताकि दूसरा सम्बन्ध पैदा हो। एक ओर से दिल को रोको ताकि दूसरी ओर से दिल को मार्ग मिल जाए। पृथ्वी का गन्दा कीड़ा फैंक दो ताकि आकाश का चमकता हीरा तुम्हें प्रदान किया जाए और अपने प्रारम्भ की ओर लौटो वही प्रारम्भिक स्थान जब आदम ख़ुदाई रूह से जीवित किया गया था ताकि तुम्हें समस्त वस्तुओं पर बादशाहत मिले जैसा कि तुम्हारे पिता को मिली।

दिन गुज़र गया अस्र का समय है चार बजे के क़रीब, रात हुआ चाहती है सूर्य अस्त होने को है अब यदि देखना है तो देख लो फिर क्या देखोगे। इस से पहले कि कूच करो अपने खाने के लिए उत्तम चीज़ें आगे भेजो न कि पत्थर और ईंट और पहनने के लिए लिबास भेजो न कि कांटे और कूड़ा कर्कट। वह ख़ुदा जो बच्चे के जन्म लेने से पहले स्तनों में दूध डालता है। उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही युग में तुम्हारे ही देशों में....एक भेजा है ताकि मां के समान अपनी छातियों से तुम्हें दूध पिलाए। वही तुम्हें विश्वास का दूध पिलाएगा जो सूर्य से अधिक सफेद और समस्त शराबों से अधिक तुम्हें मस्ती प्रदान करता है। तो यदि तुम जीवित पैदा हुए हो मुर्दा नहीं तो आओ उस स्तन की ओर दौड़ो कि तुम उस से ताज़ा दूध पियोगे। वह दूध अपने बर्तनों से फैंक दो जो ताज़ा नहीं है तथा गन्दी हवाओं ने उसे दुर्गन्धयुक्त कर दिया है और उस में कीटाणु चल रहे हैं जिन को तुम देख नहीं सकते वह तुम्हें रौशन नहीं कर सकता बल्कि अन्दर प्रवेश करते ही तबीयत को बिगाड़ देगा क्योंकि अब वह दूध नहीं बल्कि एक ज़हर है। प्रत्येक सफेदी को प्रशंसा की दृष्टि से न देखो क्योंकि कुछ सफेद से कुछ काले ही अच्छे होते हैं। जैसा कि काला बाल जवानी की शक्ति को इंगित करता है और सफेद बाल निर्बलता, कमज़ोरी और बुढ़ापे को। इसी प्रकार दिखावे की सफेदी और नेकी की प्रदर्शनी किसी काम की नहीं। इस से गुनाहगार साधारण तौर तरीकों रखाव वाला अच्छा है कि जो धोखे से अपने गुनाह को नहीं छुपाता। अत: मैं सच सच कहता हूं कि वह ख़ुदा की क्षमा से अधिक करीब है। उन चीज़ों पर भरोसा मत करो जो निश्चित नहीं जिन के साथ कोई सच्चा प्रकाश नहीं जिन के नीचे कोई पवित्र फ़िलास्फी नहीं कि वे सब तबाही के मार्ग हैं। तुम अपने दिलों की इच्छाओं का अनुमान करो कि वे क्या चीज़ चाहते हैं और वे किस प्रकार से

समझ सकते हैं कि इस प्रकार हम बुराई से अलग हो सकते हैं।

किस इलाज पर उन की अन्तरात्मा बोलती है कि यह हमारे लिए पर्याप्त होगा क्या कोई दिल इस बात को स्वीकार करता है कि मसीह का ख़ून उस को गुनाह करने से भय दिलाए बल्कि अनुभव बता रहे हैं कि और भी दिलेर करता है। क्योंकि मसीह के ख़ून पर भरोसा करने वाला जानता है कि उस के गुनाह का फिदिया अदा हो चुका है परन्तु गुनाह के ज़हर का ज्ञान जिसे दिया जाएगा वह किसी प्रकार गुनाह नहीं कर सकता क्योंकि वह उस में अपनी मौत देखता है। तो ख़ुदा की ओर से भेजा गया है जो ऐसे ज्ञान तक तुम्हें पहुंचाना चाहता है जिस से तुम्हारे दिल ख़ुदा को देख लें तथा बुराई के ज़हर को देख लें। तब तुम स्वयं गुनाह से भागोगे जिस प्रकार कि एक इन्सान शेर से भागता है। तो इस पुस्तक का आवश्यक कर्त्तव्य यही होगा कि उस की शिक्षा और उस के निशानों को दुनिया फैलाए ताकि जो लोग सलीब और मसीह के ख़ून में मुक्ति ढूढंते हैं वे वास्तविक मुक्ति के झरने को देख लें। वास्तविक मुक्ति उन पानियों में नहीं है जिन में एक भाग पानी और बीस भाग कीचड़ और गन्दगी। दिलों को धोने वाला पानी आकाश से अपने समय में उतरता है जो नहर उस से पूर्ण रूप से भरी हुई चलती है वह कीचड़ और मैले पानी से बहुत दूर होती है और लोग उस का स्वच्छ और अच्छा पानी इस्तेमाल करते हैं, किन्तु वह नहर जो सूखी हुई है और कुछ थोड़ा पानी उस में खड़ा है और वह भी बदबूदार, उस में वह शुद्धता और स्वच्छता नहीं रह सकती तथा उस में बहुत सा कीचड़ मिल जाता है कई जानवर उस में मल मूत्र करते हैं, इसी प्रकार जिस दिल को ख़ुदा का ज्ञान दिया गया है और विश्वास प्रदान किया गया है। वह उस पूर्ण रूप से भरी हुई नहर के समान है जो सब खेतों को सींचती चली जाती है और उस का स्वच्छ और ठण्डा पानी दिलों को आराम देता तथा कलेजों की जलन को दूर करता है वह न केवल स्वयं पवित्र है बल्कि पवित्र भी करता है क्योंकि वह दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता प्रदान करता है जो दिलों के ज़ंग दूर करती है। गुनाह से नफरत दिलाती है परन्तु वह जो थोड़े पानी के समान है जिस में कीचड़ मिला हुआ है वह सृष्टि (मख़लूक) को कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकती और न स्वयं को स्वच्छ कर सकती। तो अब समय है कि उठो और विश्वास का पानी तलाश करो कि तुम्हें मिलेगा तथा विश्वास की अधिकता के साथ एक दरिया के समान बह निकलो। प्रत्येक सन्देह और शंका की गन्दगी से पवित्र हो कर गुनाह से दूर हो जाओ। यही पानी है जो गुनाह के निशानों को धोएगा और तुम्हारे सीने की तख़्ती को साफ कर के ख़ुदा के निशानों के लिए तैयार कर देगा। तुम कामवासना सम्बन्धी अक्षरों का उस (दिल की तख़्ती) से किसी प्रकार मिटा नहीं सकते जब तक कि विश्वास के शुद्ध पानी से उसे धो न डालो। संकल्प करो ताकि तुम्हें सामर्थ्य दी जाए ढूंढो ताकि तुम्हारे लिए उपलब्ध किया जाए, दिलों को नर्म करो ताकि उन बातों को समझ सको क्योंकि संभव नहीं कि कठोर दिल वास्तविकताओं को समझ सके। क्या तुम सोचते हो कि तुम उस मार्ग के बिना ख़ुदा की श्रेष्ठता तुम्हारे दिल में स्थापित हो और उस जीवित ख़ुदा का प्रताप तुम पर खुले और उस की सत्ता तुम पर प्रकट हो और दिल विश्वास के प्रकाश से भर जाए किसी अन्य उपाय से तुम गुनाह से सच्ची नफरत कर सको, हरगिज़ नहीं एक ही मार्ग और एक ही ख़ुदा तथा एक ही कानून। (रीव्यू आफ रिलीजन्ज़ उर्दू अंक 1 पृष्ठ 9 से 30 प्रकाशित जनवरी 1902 ई से उदधृत) (पुस्तक- गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है? पृष्ठ 31-34) **समाप्त।**

सम्पादकीय

धर्मों के बीच सद्भाव

धार्मिक मतभेद को लेकर हमारे देश में आए दिन कोई न कोई विवाद उत्पन्न होता रहता है और फ़िर उससे बात आगे बढ़ते बढ़ते जान माल की हानि तक पहुँच जाती है। और यह धार्मिक मतभेद का विषय ऐसा होता है कि उसके सामने सरकारें भी कहीं न कहीं विवश नज़र आती हैं। क्या धर्मों के बीच सामंजस्य का कोई ऐसा मार्ग है या कोई ऐसा प्लेटफार्म है जिस पर खड़े होकर यह मतभेद और झगड़े मिटाए जा सकें। पवित्र क़ुरआन ने इसका एक मार्ग प्रस्तुत किया है फ़रमाता है-

قُلْ يَاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا

"अर्थात (हे मुहम्मद) कह दे कि हे अहल-ए-किताब (अर्थात उन धर्मों के अनुयायियो जिनको ईश्वर की ओर से कोई धर्मविधान दिया गया है) उस बात की ओर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच साझी है कि हम अल्लाह (परमेश्वर, परब्रह्म, परमात्मा) के सिवा किसी की उपासना नहीं करेंगे और न ही किसी चीज़ को उस का भागीदार ठहराएँगे।" (आले इमरान- 3/65)

प्रिय पाठको! निम्न स्तर की बातों को यदि छोड़ दें तो केवल यह एक बात ही धर्मों के बीच आपसी प्रेम और सद्भाव के लिए पर्याप्त है कि हम सबका ईश्वर एक है और हम सब उसी की सृष्टि हैं फिर विवाद और नफ़रत कैसी? हर धर्म का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति ही तो है, फिर लड़ाई क्यों?

पवित्र क़ुर्आन इस विषय में भी हमारा मार्गदर्शन करता है जिसका पालन करके हमें इसी संसार में ईश्वर का दर्शन प्राप्त हो सकता है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا (अलकहफ़-111)

अर्थात् जो व्यक्ति चाहता है कि इसी संसार में ईश्वर का दर्शन हो जाए जो वास्तविक ईश्वर तथा स्रष्टा है तो चाहिए कि वह ऐसे शुभ कर्म करे जिनमें किसी प्रकार का विकार न हो अर्थात् उसके कर्म न किसी को दिखाने के लिए हों, न उनके कारण हृदय में घमंड पैदा हो कि मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ और न वे कर्म अपूर्ण और अधूरे हों और न उनमें कोई ऐसी दुर्गंध हो जो व्यक्तिगत प्रेम के विपरीत हो बल्कि चाहिए कि निष्ठा एवं वफ़ादारी से भरे हुए हों तथा उस के साथ यह भी चाहिए कि प्रत्येक प्रकार के शिर्क (ख़ुदा के साथ भागीदार ठहराना) से बचाव हो। न सूर्य, न चन्द्रमा, न आकाश के सितारे, न वायु, न अग्नि, न पृथ्वी की कोई ऐसी वस्तु उपास्य ठहराई जाए और न संसार के साधनों को ऐसा सम्मान दिया जाए तथा उन पर ऐसा भरोसा किया जाए कि मानो वह ख़ुदा के भागीदार हैं और न अपने साहस और प्रयास को कुछ चीज़ समझा जाए क्योंकि यह भी शिर्क के प्रकारों में से एक प्रकार है बल्कि सब कुछ करके भी यह समझा जाए कि हमने कुछ नहीं किया। यदि हम ऐसा करते हैं तो निश्चित रूप से हमें ईश्वर भी मिलेगा और परस्पर सद्भाव से नफरत और घृणा भी दूर होगी और देश उन्नति करेगा अन्यथा देश की बुद्धि, बल, संपत्ति और युवा पीढ़ी इसी धार्मिक उन्माद तथा मतभेद की भेंट चढ़ती रहेगी। **फ़रहत अहमद आचार्य**

अल्लाह के दर्शन

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं :-

''जिसको सन्देहों से छुटकारा नहीं उसको अज़ाब से भी छुटकारा नहीं जो व्यक्ति इस जगत में अल्लाह तआला के दर्शन करने से वंचित है वह प्रलय के दिन भी अन्धकार में गिरेगा। ख़ुदा का कथन है- مَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल - 17/73) अर्थात् - ''जो व्यक्ति इस लोक में (आध्यात्मिक रूप से) अन्धा होगा वह परलोक में भी अन्धा होगा'' (किताबुल बरीया पृष्ठ-65) इसी प्रकार अपने एक काव्य में आप लिखते हैं -

(1) किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दउल अनवार* का
बन रहा है सारा आलम* आईना अबसार* का।
(2) चाँद को कल देख कर मैं सख्त बेकल हो गया,
क्योंकि कुछ कुछ था निशां उसमें जमाले यार* का।
(3) उस बहारे हुस्न* का दिल में हमारे जोश है,
मत करो कुछ ज़िक्र हम से तुर्क या तातार का।
(4) है अजब जलवा तेरी क़ुदरत का प्यारे हर तरफ,
जिस तरफ़ देखें, वही रह है तेरे दीदार* का।
(5) चशमए खुर्शीद में मौजें तेरी मशहूद* हैं,
हर सितारे में तमाशा है तेरी चमकार का।
(6) तूने खुद रूहों पे अपने हाथ से छिड़का नमक,
इससे है शोरे मोहब्बत आशिक़ाने ज़ार* का।
(7) क्या अजब तूने हर इक ज़र्रे में रखे हैं ख़वास,*
कौन पढ़ सकता है सारा दफ़्तर उन असरार* का।
(8) तेरी क़ुदरत का कोई भी इन्तिहा पाता नहीं,
किस से खुल सकता है पेंच इस उक़दए दुश्वार* का।
(9) खूबरूयों* में मलाहत* है तेरे उस हुस्न की,
हर गुलो गुलशन में है रंग उस तेरी गुलज़ार का।
(10) चश्म मस्ते हर हसीं हर दम दिखाती है तुझे,
हाथ है तेरी तरफ हर गेसुए ख़मदार* का।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-2, पृष्ठ-52, सुर्मा चष्म आर्या, पृष्ठ-4)

---

*मब्दउल अनवार = ज्योति का स्रोत। *आलम = ब्रह्माण्ड। *आईना अबसार का = आँखों का दर्पण। *जमाले यार = प्रेमी का सौन्दर्य। *बहारे हुस्न = हुस्न की बहार। *दीदार = दर्शन। *चश्मये खुर्शीद = सूर्य कि किरणें। *मौजें = लहरें। *मशहूद = दिखाई देता है। *आशिक़ाने ज़ार = प्रेम में दिवाने। *ख़वास = विशेषताएँ। *असरार = रहस्य। *उक़दए दुश्वार = कठिन समस्या। *खूबरूओं = सुन्दर चेहरे वाले। *मलाहत = सलोनापन। *गेसुए ख़मदार = घुंगराली ज़ुल्फें।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक-15.10. 2021 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत उमर बिन अल् खत्ताब रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के हवाले से सही बुख़ारी की रिवायत से पता चलता है कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु पर हमले के समय फ़ज्र की नमाज़ अदा की गई, जबकि सही बुख़ारी की एक अन्य रिवायत के अनुसार हज़रत इब्ने अब्बास रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का ख़ून अधिक बह जाने के कारण मूर्छता आ गई तो मैंने लोगों के साथ उन्हें उठा कर घर पहुंचा दिया। सवेरा होने पर आप रज़ी. को जब होश आया तो आप रज़ी. के पूछे जाने पर बताया कि लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है। इस पर आप रज़ी. ने फ़रमाया कि उसका कोई इस्लाम नहीं जिसने नमाज़ को छोड़ दिया। फिर आप रज़ी. ने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। तबक़ाते कुबरा नामक पुस्तक में भी यही बयान हुआ है कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को घर पहुंचाने के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ पढ़ाई जिसमें दो छोटी सूरतें पढ़ने का वर्णन मिलता है।

तबक़ाते कुबरा में लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने जब लोगों से हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को छुरा मारने के विषय में पूछा तो लोगों ने मुग़ीरा बिन शअबा के ग़ुलाम अबू लूलू का नाम लिया, जिसने पकड़े जाने पर उसी छुरे से आत्महत्या कर ली। इतिहासकारों के कथनों से यह अनुभव होता है कि अबू लूलू फ़िरोज़ ने क्षणिक जोश एवं क्रोध में हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की हत्या कर दी थी। इतिहास एवं सीरत की महत्त्व पूर्ण पुस्तक 'अलबदाय: वन्नहाय:' में हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की हत्या में हर्मज़ान तथा जफ़ीना पर किए गए सन्देह के परिणाम में वर्तमान

के कुछ इतिहासकार हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की हत्या को नियमबद्ध रूप में एक सुनियोजित षड्यन्त्र कहते हैं तथा मदीना में रहने वाला हर्मज़ान नामक ईरानी सेनापति जो ज़ाहिर में मुसलमान था, इसमें शामिल समझते हैं।

मुहम्मद रज़ा साहब अपनी किताब सीरत उमर फ़ारूक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु में लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने कूफ़ा के अधिकारी को हज़रत मुग़ीरा बिन शअबा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की सिफ़ारिश पर उनके प्रतिभावान ग़ुलाम अबू लूलू को, जो लुहार तथा चित्रकला का निपुण बाढ़ी था, मदीना आने की अनुमति दी। ग़ुलाम की शिकायत पर कि हज़रत मुग़ीरा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने उस पर सौ दर्हम टैक्स निश्चित किया। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने वह टैक्स उसके काम की निपुणता के अनुसार निश्चित किया जिसके कारण वह नाराज़ हो गया। एक दिन हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के हवा से चलने वाली चक्की बनाने का पूछने पर अबू लूलू ने क्रोध तथा घृणा की अवस्था में धमकी देते हुए कहा कि मैं आप रज़ी. के लिए ऐसी चक्की बनाउंगा जिसकी लोग चर्चा करेंगे। उसने हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को शहीद करने का पक्का निश्चय करके बीच के दस्ते वाला दो धारी छुरा बनाकर, ज़हर में बुझा कर, ईरानी सेनापति हर्मज़ान को दिखाया, जिसने अपना विचार व्यक्त किया कि इसके द्वारा जिस पर भी वार होगा, उसकी मृत्यु हो जाएगी। हर्मज़ान को मुसलमानों ने तुस्तर नामक स्थान पर बन्दी बनाकर मदीना भेज दिया था, हर्मज़ान मरने के भय से मुसलमान हो गया था।

तबक़ात इब्ने सअद में नाफ़े की रिवायत के अनुसार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने हर्मज़ान तथा जफ़ीना के पास वह छुरी देखी है जिससे हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया गया। जबकि तबरी में वर्णित सईद बिन मुसय्यब रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत के अनुसार अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बिन अबी बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने वह छुरा देखा था जो अबू लूलू, जफ़ीना तथा हर्मज़ान के बीच गिर गया था। हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने अपनी तलवार से दोनों की हत्या कर दी। एक अन्य स्थान पर बयान हुआ है कि हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने जब हर्मज़ान पर तलवार से वार किया तो उसने ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा और जब जफ़ीना को तलवार मारी तो उसने अपनी आँखों के सामने सलीब का निशान बनाया, तत्पश्चात उन्होंने अबू लूलू की बेटी का भी वध कर दिया।

इसी प्रकार एक अन्य सीरत लिखने वाले डा. मुहम्मद हुसैन हैकल अपनी किताब में लिखते हैं कि ईरानी, यहूदी तथा ईसाई, मुसलमानों से घोर पराजित होने पर अपने दिलों में सामान्यत: अरबों के विरुद्ध तथा विशेषत: हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के विरुद्ध घृणा तथा द्वेष की भावनाएँ छिपाए बैठे थे। सम्भवत: अबू लूलू का काम मदीना में अजमी बे-दीनों के एक संक्षिप्त दल की ईर्ष्या तथा बदला लेने की भावना से परिपूर्ण लोगों की साज़िश का नतीजा हो। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के बेटे इस साज़िश से पर्दा उठा कर उसकी तह तक पहुंच सकते थे, यदि अबू लूलू फ़िरोज़ आत्महत्या न करता, परन्तु विधि के विधान ने इस साज़िश की ओर मार्ग दर्शन किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत

अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु मुसलमानों में सबसे अधिक विश्वसनीय गवाही दे रहे हैं कि जिस छुरी से हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया गया वह हर्मज़ान और जफ़ीना के पास थी। इसके बाद किसी सन्देह की आवश्यकता नहीं कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु उस साज़िश का शिकार हुए।

अतएव हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की किसी कार्यवाही की वैधानिक रूप से अनुमति नहीं थी। किसी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं कि वह स्वयं बदला लेने के लिए खड़ा हो जाए अथवा अपना हक़ स्वयं वसूल करे जबकि मामलों का फ़ैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप स. के बाद आपके ख़लीफ़ाओं के लिए निर्धारित था कि वे लोगों के बीच न्यायसंगत निर्णय तथा दोषियों के विरुद्ध किसास (ख़ून का बदला ख़ून) का आदेश पारित करते थे। इसकी भी सम्भावना है कि यह हत्या एक सुनियोजित साज़िश हो, कुछ इतिहासकारों के प्रमाणों में दम है क्यूँकि हज़रत उसमान रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु भी इसी तरह की एक साज़िश का शिकार हुए जिससे इस सन्देह को बल मिलता है कि इस्लाम की बढ़ती हुई उन्नति तथा ग़ल्ब: को रोकने के लिए तथा अपने बदले की आग को ठंडा करने के लिए बाहरी दुष्टों की साज़िश के अंतर्गत ही हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया गया था, वल्लाहु आअलमु (अल्लाह ही बेहतर जानता है)। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु आयत-

وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا

की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ाओं पर कोई ऐसी दुविधा नहीं आई जिससे वे भयभीत हुए हों और यदि आई तो अल्लाह तआला ने उसे अमन से बदल दिया। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु निरन्तर दुआएँ किया करते थे कि या अल्लाह, मुझे मदीने में शहादत नसीब कर। अत: उनकी शहादत पर किस तरह कहा जा सकता है कि उन पर भयानक समय आया, किन्तु ख़ुदा तआला ने अमन से न बदला। अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की दुआ क़बूल कर ली और ऐसे सामान पैदा कर दिए जिनसे इस्लाम की प्रतिष्ठा स्थापित रही। अत: मदीने पर किसी बाहर की सेना द्वारा हमला होने के बजाए भीतर से ही एक दुष्ट उठा और उसने छुरे से आप रज़ी. को शहीद कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने ग़ुलामों की आज़ादी के हवाले से इस्लाम की शिक्षा बयान करते हुए हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की शहादत का कारण बयान फ़रमाया कि यह आदेश था कि ग़ुलामों को बिना किसी तावान (जुर्माने) के रिहा कर दो, यदि ऐसा नहीं कर सकते तथा कोई ग़ुलाम तावान (क्षतिपूर्ति) अदा करने का सामर्थ्य न रखता हो तो वह अपने तावान की किस्तें तय करा सकता है। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को एक ऐसे ग़ुलाम ने ही मारा था जिसने मकातबत (अपने मालिक से आज़ाद होने का समझौता) की हुई थी। एक मुक़दमा आप रज़ी. के पास आया कि किसी व्यक्ति का ग़ुलाम कमाता बहुत था किन्तु मालिक को देता कम था। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने साढ़े तीन आने उसके ज़िम्मे लगा दिए कि मालिक को अदा किया करो। इस निर्णय को उसने ईरानी होने के कारण अपने विरुद्ध समझा तथा क्रोध में दूसरे ही दिन छुरे से आप पर हमला कर दिया और उसके ज़ख्मों के कारण आप

रज़ी. शहीद हो गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने इस दु:खद घटना का वर्णन करते हुए कहा कि इसका आज तक इस्लाम पर प्रभाव है और वह इस तरह कि यद्यपि मौत हर समय लगी हुई है परन्तु ऐसे समय पर मौत के आने का ध्यान नहीं किया जाता जब शरीर में शक्ति हो, किन्तु जब शरीर दुर्बल हो तथा स्वास्थ्य पतन की ओर जा रहा हो तो लोगों की सोच स्वयं ही आगे के प्रबन्ध के बारे में सोचना शुरु कर देती है तथा वे एक दूसरे से इसके विषय में बातें नहीं करते परन्तु स्वयं ही ऐसी अवस्था पैदा हो जाती है जो आगे आने वाले समय के बारे में विचार करने की तहरीक करती है। इस कारण से जब इमाम की मृत्यु हो तो लोग चौकस होते हैं। क्यूँकि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का शरीर सुदृढ़ था यद्यपि उनकी आयु त्रेसठ वर्ष की हो चुकी थी परन्तु सहाबियों के मस्तिष्क में यह न था कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु जल्दी ही उनसे जुदा हो जाएँगे इस कारण से वे आगे के प्रबन्ध के बारे में निश्चिंत थे कि सहसा हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की मृत्यु का शोक आ पड़ा। उस समय जमाअत किसी दूसरे इमाम को स्वीकार करने के लिए तय्यार नहीं थी। उस समय की निश्चिंत अवस्था का परिणाम यह हुआ कि हज़रत उसमान रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु से लोगों को वह लगाव पैदा न हुआ जो होना चाहिए था इसके कारण इस्लाम की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई, जो फ़साद बाद में हुए आप रज़ी. की दृष्टि में उनका एक कारण यह भी हो सकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ के समय कुछ लोग सुरक्षा की दृष्टि से नियुक्त करने के विषय में भी हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की शहादत वाली घटना को बयान करते हुए फ़रमाया कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के साथ मुसलमान भी नमाज़ में व्यस्त थे कि एक दुष्ट व्यक्ति ने आगे बढ़ कर छुरे से वार कर दिया। क़ुर्आन मजीद का स्पष्ट आदेश है कि सुरक्षा के लिए मुसलमानों में से आधे खड़े रहा करें, यद्यपि यह युद्ध के समय की बात है किन्तु इससे समझा जा सकता है कि छोटे फ़ितने को रोकने के लिए यदि कुछ लोग नमाज़ के समय खड़े कर दिए जाएँ तो यह आपत्ति जनक बात नहीं। इस घटना के बाद सहाबियों ने व्यवस्था कर दी कि जब भी नमाज़ पढ़ते सदैव सुरक्षा के लिए पहरे रखते।

हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के निधन पर निर्धनों तथा दुर्बल लोगों पर खर्च करने के कारण उनके ज़िम्मे छियासी हज़ार दर्हम ऋण था। वफ़ाउल वफ़ा नामक पुस्तक में हज़रत इब्ने उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत हफ़सा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा को ऋण चुकता करने के लिए अपने मकान को बेचने और बनू अदी तथा क़ुरैश के अतिरिक्त किसी और से मदद न मांगने की हिदायत फ़रमाई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मुआविय: रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को वह मकान बेच कर हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का ऋण चुकता कर दिया। उस घर को "दारुल क़ज़ाइ दैने उमर" कहा जाने लगा, अर्थात वह घर जिसके द्वारा हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का ऋण चुकता किया गया था। यह वर्णन अभी शेष है इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

☆ ☆ ☆

ज़िक्रे इलाही (अर्थात अल्लाह को याद करने और उसका नाम जपने) के बारे में हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़िअल्लाहु अन्हु के निर्देश

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़िअल्लाहु अन्हु जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई. के अपने भाषण में (जो **ज़िक्रे इलाही** के नाम से पुस्तक के रूप में उपलब्ध है) अल्लाह को याद करने के विभिन्न तरीकों और उसकी मुहब्बत प्राप्त करने के बारे में फ़रमाते हैं:-

तहज्जुद (रात्रि में उपासना करने) के लिए उठने के तेरह तरीके:

अब सवाल यह है कि तहज्जुद पढ़नी तो ज़रूर चाहिए लेकिन रात को उठें कैसे? इसका एक छोटा तरीका पहले बताता हूँ। हालांकि इसमें नुकसान भी है लेकिन लाभ भी हो सकता है और वह यह है कि आजकल अलार्म वाली घड़ियां मिल सकती हैं उनके द्वारा मनुष्य जाग सकता है। लेकिन मेरा अनुभव है कि यह कोई ऐसा उपयोगी तरीका नहीं है। कारण यह है कि चूंकि मनुष्य को भरोसा हो जाता है कि वह मुझे समय से जगा देगी इसलिए रात को उठने की नेकी की तरफ जो तवज्जो और विचार होना चाहिए वह उसे नहीं होता। अगर उसे उठने का विचार होता और इसी विचार में ही उसकी आंख लग जाती तो मानो वह सारी रात इबादत करता रहता। इसके अतिरिक्त कभी ऐसा भी होता है कि अगर उठने को जी न चाहे तो व्यक्ति बजते बजते अलार्म को बंद कर देता है। लेकिन अगर नीयत और इरादे से सोएगा तो समय पर ज़रूर उठ खड़ा होगा। फिर ऐसे लोग जो घड़ी द्वारा उठते हैं वे इस बात की शिकायत करते हैं कि नमाज़ में नींद आती है। इसकी भी वजह यही है कि वह घड़ी से उठते हैं न कि अपने तौर से इसलिए यह तरीका कोई उपयोगी नहीं है। हाँ प्रारंभिक अवस्था के लिए या किसी विशेष ज़रूरत के समय उपयोगी होता है।

मेरे निकट वे तरीके जिनसे रात उठने में मदद मिल सकती है तेरह हैं। यदि कोई व्यक्ति उन पर अमल करे तो मैं विश्वास रखता हूँ कि अल्लाह तआला के फज़ल से उसे ज़रूर सफलता होगी। शुरू में तो हर काम में परेशानी होती है लेकिन अन्ततः ज़रूर उनके द्वारा सफलता होगी। यह सब बातें जो मैं बयान करूँगा वह क़ुरआन और हदीस से ही समायोजन हुई बयान करूँगा न कि अपनी ओर से। लेकिन यह ख़ुदा तआला ने मुझ पर विशेष कृपा की है कि ये बातें मुझ पर ही खोली गई हैं। और दूसरों से छिपी रही हैं। अगर समय तंग न होता तो मैं क़ुरआन की वे आयतें और हदीसें भी बयान कर देता जिनसे मैंने उद्धृत की हैं लेकिन अब केवल परिणाम ही बयान करूँगा।

पहला तरीका

यह है कि अल्लाह तआला ने प्रकृति में यह नियम रखा है कि जिस समय कोई चीज़ पैदा हुई हो वही जब दूसरी बार आए तो इस चीज़ में फिर जोश पैदा हो जाता है। इस के उदाहरण बहुत मिल सकते हैं। जैसे इंसान को जो बीमारी बचपन में हुई हो वही बीमारी बुढ़ापे में जबकि बचपन जैसी स्थिति हो जाती है लौट आया करती है। यही बात पेड़ों और पक्षियों में पाई जाती है। इस नियम से रात में उठने में इस तरह मदद मिल सकती है कि

इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद कुछ समय ज़िक्र कर ले। इसका यह फायदा होगा कि जितना समय वह ज़िक्र करेगा सुबह उतना ही पहले उसकी आंख ज़िक्र करने के लिए खुल जाएगी।

दूसरा तरीका

यह है कि इशा की नमाज़ पढ़ लेने के बाद किसी से बात न करे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद बात करने से रोका है। यद्यपि यह भी साबित होता है कि कई बार आप कलाम करते रहे हैं। लेकिन आमतौर पर आपने मना फरमाया है। इसका कारण यह है कि अगर इशा की नमाज़ के बाद बातें शुरू कर दी जाएगी तो व्यक्ति अधिक जागेगा और सुबह देर करके उठेगा और दूसरे यह कि अगर वे बातें मज़हबी और धार्मिक न होंगी तो उनकी वजह से ध्यान धर्म से हट जाएगा। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इशा की नमाज़ के बाद बिना बात किए सो जाना चाहिए ताकि धार्मिक विचारों पर ही आंख लगे और जल्दी खुल जाए। दफ़्तर के काम या और कोई आवश्यक कार्य इशा की नमाज़ के बाद मना नहीं। लेकिन यह आवश्यक है कि सोने से पहले ज़िक्र कर ले। यह दूसरा तरीका है।

तीसरा तरीका

यह है कि जब कोई इशा की नमाज़ पढ़कर आए और सोने लगे तो चाहे उसका वज़ू ही है तो भी ताज़ा वुज़ू करके चारपाई पर लेटे। इसका असर दिल पर पड़ता है और विशेष प्रकार की ताज़गी पैदा होती है और जब कोई ताजा वज़ू के कारण ताज़गी की स्थिति में सोएगा तो वह आंख खुलते समय भी ताज़गी में ही होगा। आमतौर पर यह देखा गया है कि अगर कोई रोता सोए तो वह चीख़ मार कर उठ बैठता है और अगर हंसता सोए तो उठते समय भी उसका चेहरा खिला हुआ होता है उसी तरह जो वुज़ू करके ताज़गी से सोता है वह उठता भी ताज़गी से ही है और इस तरह उसे उठने में मदद मिलती है।

चौथा तरीका

यह है कि जब सोने लगे तो कोई ज़क्रि करके सोए। इसका नतीजा यह होगा कि रात ज़िक्र करने के लिए फिर उसकी आंख खुल जाएगी। यही कारण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोने से पहले यह ज़िक्र किया करते थे। आयतल कुर्सी, फिर तीनों क़ुल एक बार पढ़ कर अपने हाथों में फूंकते और हाथ सारे शरीर पर फ़ेरते और ऐसा तीन बार करते थे और फिर दाईं ओर मुंह करके यह ज़िक्र पढ़ते-

اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِیْ اِلَیْكَ، وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً اِلَیْكَ، وَاَلْجَاْتُ ظَهْرِیْ اِلَیْكَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجٰی اِلَّا اِلَیْكَ، اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ، وَنَبِیِّكَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ (तिर्मिज़ी किताबुद्दअवात)

इसी तरह प्रत्येक मोमिन को चाहिए और फिर चारपाई पर लेटकर दिल में سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ या कोई अन्य ज़िक्र जारी रखना चाहिए। यहां तक कि इस हालत में आंख लग जाए। क्योंकि जिस हालत में व्यक्ति सोता है आमतौर पर वही स्थिति सारी रात उस पर गुज़रती है। इसलिए जो व्यक्ति तस्बीह और तहमीद करते हुए सोएगा मानो सारी रात इसी में लगा रहेगा। देखो महिलाएं या बच्चे अगर किसी दु:ख और पीड़ा में सोएं तो सोते सोते जब करवट बदलते हैं दर्दनाक और ग़मगीन आवाज़ निकालते हैं

क्योंकि इस ग़म का जो सोते समय उन्हें था उन पर असर होता है। लेकिन अगर कोई तस्बीह करते हुए सोएगा तो जब करवट बदलेगा उसके मुंह से तस्बीह की आवाज़ ही निकलेगी। यही कारण है कि क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि मोमिन वह होते हैं कि-

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا ۫ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

(अस्सजदा: 17)

अर्थात उनके पहलू बिस्तरों से उठे रहते हैं और वे भय और प्रलोभन से अल्लाह को पुकारते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है उससे खर्च करते हैं। ज़ाहिर में तो यह बात सही नहीं लगती क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोते थे और दूसरे सब मोमिन भी सोते हैं लेकिन मूल बात यह है कि चूंकि तस्बीह करते सोते हैं इसलिए उनकी नींद नींद नहीं होती बल्कि तस्बीह ही होती है और हालांकि वे सोते हैं लेकिन वास्तव में सोते नहीं। उनकी कमरें बिस्तरों से अलग रहती हैं और वह ख़ुदा की याद में संलग्न रहते हैं।

पांचवां तरीका

यह है कि सोने के समय सही इरादा कर लिया जाए कि तहज्जुद के लिए ज़रूर उठूंगा। इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने यह शक्ति रखी है कि जब वह ज़ोर से अपने नफ्स को कोई आदेश करता है तो वह स्वीकार कर लेता है और यह एक ऐसी बात है जो सभी बुद्धिमान स्वीकार करते आए हैं। अत: तुम सोने के समय पक्का इरादा कर लो कि तहज्जुद के समय ज़रूर उठोगे। ऐसे में यद्यपि तुम सो जाओगे लेकिन तुम्हारी रूह जागती रहेगी कि मुझे आदेश मिला है कि अमुक समय जगाना है और ठीक समय पर अपने आप तुम्हारी आंख खुल जाएगी।

छठा तरीका

ऐसा है कि जिस के करने की केवल ऐसे ही व्यक्ति को अनुमति देता हूँ जो यह देखता है कि मेरा ईमान ख़ूब मज़बूत है और वह यह कि वितरों को इशा की नमाज़ के साथ न पढ़े बल्कि तहज्जुद के समय पढ़ने के लिए रहने दे। आमतौर पर यह बात पाई जाती है कि व्यक्ति फर्ज़ को खास तौर से निभाता है मगर नफ्ल में सुस्ती कर जाता है। अत: जब नफ्लों के साथ वाजिब मिल जाऐंगे तो उसकी रूह कभी आराम नहीं करेगी जब तक कि उसे अदा न करे और इसका नतीजा यह होगा कि नफ्स सुस्ती नहीं करेगा। लेकिन अगर वितर पढ़े हुए हैं और तहज्जुद के समय आंख खुल भी जाए तो स्वयं कह देता है कि वितर तो पढ़े हुए हैं नफिल न पढ़े तो न सही। लेकिन जब यह विचार होगा कि वितर भी पढ़ने हैं तो ज़रूर उठेगा तो नफ्ल भी पढ़ लेगा। लेकिन जैसा कि मैंने पहले बताया है उसके लिए शर्त है कि ईमान बहुत मज़बूत हो। जब ईमान मज़बूत होगा तो वितरों के लिए ज़रूर उठेगा। अन्यथा वितरों के पढ़ने से भी वंचित रहेगा।

सातवां तरीका

भी उन्हीं लोगों के लिए है जो रूहानियत (अध्यात्म) में बहुत बढ़े हुए हैं और वह यह कि इशा की नमाज़ के बाद नफिल पढ़ना शुरू कर देते हैं और इतनी देर तक पढ़ें कि नमाज़ में ही नींद आ जाए और इतनी नींद आए कि सहन न की जा सके उस समय सोए। बावजूद इसके कि इसमें अधिक समय लगेगा लेकिन जल्दी

नींद खुल जाएगी यह रूहानी व्यायाम होता है।

आठवां तरीका

वह है जो हमारे सूफ़िया में रिवाज था। मैंने उसकी ज़रूरत महसूस नहीं की लेकिन है लाभदायक और वह यह है कि जिन दिनों में अधिक नींद आए और समय पर आंख न खुले उनमें नरम बिस्तर हटा दिया जाए।

नौवां तरीका

यह है कि सोने से कई घंटे पहले खाना खा लिया जाए। अर्थात मग़रिब से पहले या मग़रिब की नमाज़ के बाद तुरंत। बहुत बार ऐसा होता है कि मनुष्य की रूह चुस्त होती है लेकिन शरीर सुस्ती कर देता है। शरीर एक बंधन है जो रूह से चिमटा हुआ है जब यह बंधन भारी हो जाए तो रूह को दबा लेता है। इसलिए सोने के समय पेट भरा नहीं होना चाहिए क्योंकि इसका असर दिल पर बहुत पड़ता है और व्यक्ति को सुस्त कर देता है।

दसवां तरीका

यह है कि जब इंसान रात को सोए तो ऐसी स्थिति में न हो कि जुनबी हो या उसे कोई गंदगी लगी हो। बात यह है कि पवित्रता से फरिश्तों का गहरा संबंध होता है और वे गंदे आदमी के पास नहीं आते बल्कि दूर हट जाते हैं। इसीलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब एक बदबूदार चीज़ खाने के लिए लाई गई तो आप ने सहाबा से कहा कि तुम खा लो मैं नहीं खाता। सहाबा ने कहा कि हम नहीं खाते। आपने कहा तुम खा लो मेरे साथ तो फरिश्ते बातें करते हैं इसलिए नहीं खाता क्योंकि उन्हें ऐसी चीज़ों से नफरत है।

तो गंदगी को फरिश्ते बहुत नापसंद करते हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल सुनाते थे कि एक बार मैंने खाना खाया और हाथ धोए बिना सो गया। रो'या (स्वप्न) मैं मैंने देखा कि मेरे भाई साहब आए हैं और उन्होंने मुझे क़ुरआन हकीम देना चाहा लेकिन जब मैं हाथ लगाने लगा तो कहा कि हाथ न लगाना तुम्हारे हाथ साफ नहीं हैं। तो बदन साफ होने का दिल पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सफाई की हालत में सोने वाले को फरिश्ते आकर जगा देते हैं लेकिन अगर सफाई में अंतर हो तो पास नहीं आते। यह तरीका शरीर की सफाई के बारे में है।

ग्यारहवां तरीका

यह है कि बिस्तर पाक व साफ हो बहुत लोग इस बात की परवाह नहीं करते लेकिन याद रखना चाहिए कि बिस्तर की पवित्रता का रूहानियत से विशेष संबंध है इसलिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

बारहवां तरीका

ऐसा है कि लोगों को इस पर अमल करने की वजह से नुकसान पहुंच सकता है। हाँ विशेष लोगों के लिए हानिकारक नहीं है और वह यह कि पति और पत्नी एक बिस्तर में न सोएँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोते थे लेकिन आपकी शान बहुत ऊंची और बुलंद है। आप पर इसका कोई असर नहीं हो सकता था। लेकिन अन्य लोगों को ध्यान देना चाहिए। बात यह है कि शारीरिक काम वासना का प्रभाव जितना हो उतना ही अध्यात्म को बंद कर देता है। यही कारण है कि शरीयत इस्लाम ने कहा है कि खाओ पियो लेकिन सीमा से न बढ़ो। क्यों न बढ़ो, इसलिए कि क्योंकि कामवृति अधिक बढ़कर रूहानियत को नुकसान

पहुंचाएगी। तब वे लोग जो अपने नफ्स पर नियंत्रण रखते हैं वे अगर इकट्ठे सोएं तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन आम लोगों को इससे बचना चाहिए। और वे लोग जिन्हें अपने विचारों पर पूरा पूरा नियंत्रण न हो उन्हें एक साथ नहीं सोना चाहिए। इस तरह उन्हें काम वासना के विचार आते रहेंगे और कई बार ऐसा भी होता है कि सोते सोते संबंध बनाने या प्यार करने लग जाते हैं इस तरह रूहानियत पर बुरा असर पड़ता है और उठने में सुस्ती हो जाती है।

तेरहवां तरीका

ऐसा उच्च है कि जो न केवल तहज्जुद के लिए उठने में बहुत बड़ी सहायता करने वाला और सहायक है बल्कि उस पर अमल करने से व्यक्ति बदी और बुराइयों से भी बच जाता है और वह यह है कि सोने से पहले देखना चाहिए कि हमारे दिल में किसी के संबंधित वैर या द्वेष तो नहीं है अगर हो तो उसे दिल से निकाल देना चाहिए।

इसका नतीजा यह होगा कि नफ्स के शुद्ध होने की वजह से तहज्जुद के लिए उठने की तौफ़ीक़ मिल जाएगी चाहे इस प्रकार के विचार उन पर भी काबू पा ही लें। लेकिन रात में सोने से पहले ज़रूर निकाल देने चाहिए और दिल को बिल्कुल खाली कर लेना चाहिए। इसमें हर्ज ही क्या है। अगर कोई ऐसे विचारों में सांसारिक लाभ समझता है तो दिल को कहे कि दिन को फिर याद रख लेना रात में सोने के समय किसी से लड़ाई तो नहीं करनी कि उन्हें दिल में रखा जाए। प्रथमत: तो ऐसा होगा कि अगर एक बार अपने दिल से किसी विचार की जड़ काट दी जाएगी तो फिर वह आएगा ही नहीं। दूसरे इस प्रकार विचार रखने से जो नुकसान पहुंचना होता है उससे व्यक्ति सुरक्षित हो जाता है। यह एक सिद्ध बात है कि एक बात जिस कदर अधिक समय दूसरे के साथ रहती है उतना ही अधिक अपना प्रभाव उस पर करती है। जैसे यदि स्पंज को पानी से भर कर किसी चीज़ पर जल्दी से फेर कर हटा लिया जाए तो वह बहुत थोड़ी गीली होगी। लेकिन अगर देर तक उस पर रखा जाए तो वह बहुत अधिक भीग जाएगी इसी प्रकार जो विचार मनुष्य को देर तक रहें वे उसके दिल में अधिक बस जाते हैं और सोते समय जिन विचारों को इंसान अपने दिल में रखे उन्हें उसकी रूह सारी रात दुहराती रहती है। दिन में अगर कोई ऐसा विचार हो तो वह इतना हानिकारक नहीं होता जितना रात के समय का। क्योंकि उनके दूसरे कामों में संलग्न होने के कारण वह भुला देता है लेकिन रात को बार बार आता है। अत: सोते समय यदि कोई बुरा विचार हो तो उसे निकाल देना चाहिए ताकि वे दिल में गड़ न जाए। क्योंकि अगर गड़ गया तो फिर उसका निकलना बहुत मुश्किल होगा। फिर अगर रात को जान ही निकल जाए तो इस बुराई के विचार से तौबा करने का मौका भी नहीं मिलता। इस प्रकार नफ्स को डराना चाहिए और जब एक बार विचार निकल जाएगा तो फिर इससे निजात मिल जाएगी। अत: सोते समय नफ्स में बुरे विचार नहीं रहने देने चाहिए। जब इस तरह दिल को शुद्ध व साफ करके कोई सोएगा तो तहज्जुद के समय उठने की उसे ज़रूर तौफ़ीक़ मिल जाएगी।

(पुस्तक- ज़िक्रे इलाही, पृष्ठ 25-37)

☆ ☆ ☆

ख़ुद्दाम के नाम हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अ. का

पैग़ाम

(सालाना इज्तेमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत 2021 ई० के अवसर पर)

प्यारे मेंबरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत!

अस्सलामो अलैकुम व रेह्मतुल्लाहे व ब्रकातुहू

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत को अपना सालाना इज्तेमा आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। अल्लाह तआला इसको हर प्रकार से सफल और बाब-रकत करे और उत्तम परिणाम प्रदान करे। आमीन

मुझसे इस अवसर पर संदेश भिजवाने का निवेदन किया गया है। मैं इस अवसर पर आप को कुछ आवश्यक निर्देश देना चाहता हूँ।

आजकल दुनियादारी के माहौल के कारण लोग अल्लाह तआला से दूर जा रहे हैं और लोगों की निर्भ-रता सांसारिक योजनाओं पर अधिक रहने लगी है लेकिन हमारी जमाअत एक रूहानी (आध्यात्मिक) जमाअत है। इसलिए आपको पाँचों वक़्त की नमाज़ें समय पर अदा करनी चाहिएं और पवित्र क़ुरआन की भी नियमित रूप से तिलावत करनी चाहिए। और जहां तक संभव हो सके नमाज़े तहज्जुद का भी प्रबंध करें। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता का मिलना वह सुनहरी कुंजी है जिस से हर प्रकार की सफलता की प्राप्ति संभव होगी। आप के लिए अनिवार्य है कि तहज्जुद की नमाज़ अदा करें। जब एक व्यक्ति ख़ुदा तआला के अधिक निकट होगा तो अल्लाह तआला की मख़लूक (सृष्टि) के अधिकारों की पूर्ति की ओर भी उस का ध्यान बढ़ेगा। हमेशा इस बात को याद रखें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि आप की बैअत में सम्मिलित होना एक नया जीवन पाने जैसा है। मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के ओहदेदारों का भी यह काम है कि वे नौजवानों को नमाज़ के महत्व के बारे में बताएं। पांच वक़्त की नमाज़ों की अदायगी के बारे में जो प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य हैं। उन्हें इनका महत्व क़ुरआनी आयतों, हदीसों और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेशों के हवाले से बताएं। प्रत्येक नौजवान को व्यक्तिगत रूप से नमाज़ों के महत्व का ज्ञान होना चाहिए। अत्फ़ाल को भी छोटी आयु से ही फ़र्ज़ नमाज़ों और जमाअती कामों में सम्मिलित होना चाहिए। इस पहलू से मजालिस-ए-आमला के मेम्बरों को और अधिक सक्रिय रूप से अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करनी चाहिए। क्योंकि अत्फ़ाल की आयु ऐसी होती है जहाँ आप को उन्हें अपने निकट रखना चाहिए, हमेशा उन्हें दीन के साथ जोड़ कर रखें और जमाअती कामों में व्यस्त रखें। इस के लिए विभिन्न मार्ग और माध्यम तलाश करने होंगे। उन से पूछें कि वे किस प्रकार के कार्यों को पसंद करते हैं और इसके अनुसार अत्फ़ालुल अहमदिया और ख़ुद्दाम के प्रोग्राम बनाएं। जितना अधिक ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल को आप जमाअती कामों में सम्मिलित करेंगे उतना ही आप जमाअत के लिए लाभदायक सरमाया तैयार कर रहे होंगे।

इसी प्रकार इस बात का भी ध्यान रखें कि ख़ुद्दाम कोई न कोई खेल अवश्य खेलें, केवल गलियों

में ही न फिरते रहें और केवल indoor (घरों के अंदर) और इंटरनेट की खेलें ही न खेलते रहें। उनको कुछ व्यायाम वाली खेलों में भाग लेना चाहिए, बाहर निकलना चाहिए और ग्राउंड में जाने का समय निर्धारित करना चाहिए।

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया की एक बड़ी ज़िम्मेदारी ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की हिफ़ाज़त है। और ख़िलाफ़ते अहमदिया की हिफ़ाज़त आप ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की बातों को सुन कर और उनका पालन करके ही कर सकते हैं। और जमाअत की हिफ़ाज़त भी इसी अवस्था में हो सकती है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की बातों को माना जाए और उनका पालन किया जाए। इस युग में ख़िलाफ़त का आज्ञापालन और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के निर्देशों के पालन का एक बहुत महत्वपूर्ण माध्यम अल्लाह तआला की महान कृपा और उपकार के रूप में स्थापित किया हुआ माध्यम है और वह M.T.A (एम.टी.ए.) है। इसलिए आप जहाँ कहीं भी हों आप को हर संभव प्रयास करना चाहिए कि मेरा ख़ुत्बा जुमा अवश्य सुनें चाहे किसी भी माध्यम से सुनें। बहुत सारे पत्र मुझे अभी भी आते हैं कि जब से हम ने एम.टी.ए. पर केवल ख़ुत्बे ही नियमित रूप से सुनने शुरू किए हैं हमारा जमाअत से संबंध गहरा होता जा रहा है और हमारे ईमानों में मज़बूती पैदा हो रही है। अत: इस रूहानी माइद: (आध्यत्मिक सामग्री) से फ़ायदा उठाएं ताकि आप ख़िलाफ़त की बरकतों से यथासावत लाभान्वित हो सकें।

अल्लाह तआला आपको मेरी इन समस्त नसीहतों के अनुसार पालन करने का सामर्थ्य प्रदान करे और अपनी ढेर सारी अनुकंपाओं (फ़ज़्लों) का पात्र बनाए।

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

कुछ अज्ञानियों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक अरबी पुस्तक "हमामतुल बुश्रा" में लिखते हैं:-

"उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं क़ुरआन से सिद्ध है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़त्ल या सूली (सलीब) पर लटकाए बिना आसमान की ओर उठाए जा चुके हैं और हदीसों में आया है कि वह शीघ्र नाज़िल होगा।★ और वह दज्जाल का वध करेगा और विवाह करेगा और उसकी संतान होगी। फिर वह मृत्यु को प्राप्त होगा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किया जाएगा। और कुछ हदीसों में आया है कि वह मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ और जिस ज़माने में अल्लाह महदी को अवतरित करेगा उसी ज़माने में ईसा के मौत से पूर्व आगमन पर सर्वसम्मति हो चुकी है। और वह याजूज और माजूज के विरुद्ध बद्दुआ करेगा तो वह उनकी बद्दुआ से मर जाएंगे। तो फिर उन हदीसों का कैसे इन्कार किया जा सकता है जिन पर पहले और गुज़रे हुए नेक लोगों और सहाबा और ताबईन, इमाम और बड़े-बड़े मुहद्दसीन ने सर्वसम्मति व्यक्त की है?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की मृत्यु अटल आयतों से साबित है। क्योंकि पवित्र क़ुरआन ने 'तवफ़्फ़ी' शब्द को केवल मौत देने और मारने के लिए ही प्रयोग किया है और उसके इन अर्थों का अल्लाह के रसूल ने भी सत्यापन किया है और इस पर सहाबा में से एक ऐसे व्यक्ति ने गवाही भी दी है जो अपनी क़ौम के शब्दकोश को सबसे अधिक जानने वाला था, जिसने व्याख्या के विज्ञान को प्रतिपादित किया और उसे तैयार किया और जिसे अरबी भाषा की तहक़ीक़ में पूर्ण महारथ थी और वह अध्यात्म ज्ञानियों में से था। और उसकी गवाही जैसा कि बुख़ारी में वर्णित है और बुख़ारी के व्याख्याकार 'अलऐनी' ने इब्न अबी हातिम से पूरी सनद के साथ इस रिवायत को हज़रत इब्ने अब्बास तक पहुंचाया है क्योंकि उन्होंने कहा है कि 'मुतवफ़्फ़ीक' का अर्थ है मुमीतुका (अर्थात मैं तुझे मृत्यु दूंगा)। फिर तू यह जान ले कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पार्थिव शरीर समेत जीवित उठाए जाने की आस्था के बारे में सर्वसम्मति का दावा ग़लत और बिलकुल झूठा है। इब्नुल असीर ने अपनी पुस्तक "अलकामिल" में कहा है कि जानकारों ने ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा (उठाए जाने) के बारे में मतभेद किया है कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ या बाद में। अत: उनमें से कुछ इस मत की ओर गए हैं कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ

★**हाशिया :-** यदि ईसा अलैहिस्सलाम उठाए जाने के बाद संसार की ओर पुन: आने वाले होते तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं कहते कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह लौट आए। परंतु आपने तो यह फ़रमाया है कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह नाज़िल हो। अत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का 'लौटने' के शब्द को त्यागना और 'नुज़ूल' के शब्द को अपनाना इस बात का ठोस तर्क है कि इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभिप्राय कोई और व्यक्ति है न कि वह ईसा इब्न मरियम जो अल्लाह के नबी हैं। इसी से।

और कुछ का यह मत है कि वह 3 घंटे या 7 घंटे तक मृत रहे और मौतज़िला और जहमिय्या में से एक पक्ष इस मत की ओर गया है कि आप का रफ़ा पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ बल्कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गए और उनका रफ़ा, रूहानी रफ़ा हुआ (अर्थात् उनको आध्यात्मिक रूप से उठाया गया न कि शरीर सहित) और उनका नुज़ूल (अर्थात आना) भी आध्यात्मिक होगा जैसा कि उनका आध्यात्मिक रफ़ा हुआ था। और (इमाम) बुख़ारी ने उनकी मृत्यु को अपनी 'सहीह (बुख़ारी)' में अल्लाह की किताब तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों और कुछ सहाबियों के कथन से सिद्ध किया है। (फिर बताओ कि) उनके जीवित उठाए जाने और उनके न मरने पर सर्वसम्मति कहां सिद्ध हुई और इसी प्रकार मुसलमान उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु वाले वसल्लम की क़ब्र में दफन किए जाने पर भी सहमत नहीं। और 'ऐनी' ने बुख़ारी की व्याख्या में कहा है कि- कहा गया है कि वह अरज़े मुक़द्दस: (पवित्र भूमि) में दफन होंगे और उसी प्रकार उनके नुज़ूल (उतरने) के स्थान के बारे में भी मतभेद है। और इब्ने अब्बास की हदीस में है वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल को फ़रमाते हुए सुना कि मेरा भाई ईसा इब्ने मरियम इमाम, मार्गदर्शक, निर्णायक और न्यायकर्ता होने की अवस्था में अफीक नामक पहाड़ पर उतरेगा। उसके हाथ में दज्जाल को क़त्ल करने के लिए एक भाला होगा और युद्ध स्थगित हो जाएगा। नईम बिन हमाद ने **जुबेर बिन नफीर** और शुरेह और उमर बिन अस्वद और कसीर बिन मुर्रह के तरीके पर रिवायत की है कि लोग कहते हैं कि दज्जाल ही शैतान है, उसके अतिरिक्त और कोई नहीं अर्थात वह दज्जाल अंतिम युग में निकलेगा और लोगों के दिलों में भ्रम पैदा करेगा और मसीह उसे आसमानी हथियार अर्थात नूर के द्वारा क़त्ल करेगा और सहाबा रिज़वानुल्ला अलैहिम में से जो उनके नुज़ूल पर ईमान लाए थे वह केवल लाक्षणिक तौर पर ईमान लाए थे। और जिन्होंने इस विषय में सहाबा के बाद अधिक विस्तारपूर्वक बात की है तो उन्होंने ठोकर खाई है और हम पर अनिवार्य नहीं कि हम उनके मतों का अनुसरण करें। वे भी मर्द थे और हम भी मर्द हैं और अल्लाह ने हम पर उपकार किया है और अपने इल्हामों के द्वारा हमें वह कुछ समझा दिया है जो उन्हें नहीं समझाया गया और यह अल्लाह की कृपा है और वह अपने मोमिन बंदों में से जिसे चाहता है प्रदान करता है।

और अल्लाह तआला ने क़ुरआन में संकेत किया है कि तौरात इमाम है। अर्थात उसमें हर उस घटना का उदाहरण मौजूद है जो इस उम्मत के साथ घटित होगी और यही कारण है कि उस ने फ़रमाया है-

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अंबिया- 21/8)

(अनुवाद- अत: वर्णन करने वालों से पूछ लो यदि तुम नहीं जानते।) परंतु हम तौरात में शारीरिक नुज़ूल का उदाहरण नहीं पाते बल्कि उसमें हम रूहानी नुज़ूल का उदाहरण पाते हैं। जैसा कि हमने एलिया नबी के नुज़ूल का किस्सा वर्णन किया है। अत: तू सच्चे ईमानदार दिल के साथ विचार कर। फिर इसके साथ यह भी सिद्ध हो गया कि भविष्य की घटनाएं जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या दूसरे नबियों ने दी है वे सब की सब बिल्कुल उस ज़ाहिरी रूप में घटित नहीं हुईं जैसा कि उम्मीद की जाती थी। बल्कि उनमें से कुछ ज़ाहिरी रूप में और कुछ रूपक के तौर पर घटित हुए। अत: जब

अल्लाह की सुन्नत भविष्य की ख़बरों के प्रकटन के बारे में यह है तो फिर इस बात पर कौन सी दलील है कि नुज़ूल-ए-मसीह की ख़बर ज़ाहिरी रूप से घटित होने पर आधारित हो और उसका आंतरिक रूप पर आधारित होना कैसे वैध न हो? बल्कि जब हम सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं तो बुद्धि यही गवाही देती है कि वह ख़बरें जो क़यामत के लिए बड़ी-बड़ी निशानियां हैं उनके लिए आवश्यक है कि वह रूपकों के पैराये में घटित हों। क़यामत तो अचानक ही आएगी और सन्देह करने वालों का सन्देह कभी दूर न होगा यहां तक कि वह उनके पास आ जाए जैसा कि क़ुरआनी प्रमाणों से सिद्ध है। और यदि हम बड़ी-बड़ी निशानियों के प्रकटन को उनके ज़ाहिरी रूप में उचित क़रार दें तो इन्कार करने वालों की दृष्टि में क़यामत अनुमानित नहीं रहेगी। अत: अनिवार्य है कि हम यह आस्था रखें कि बड़ी-बड़ी निशानियां अपनी ज़ाहिरी सूरत में घटित नहीं होंगी और इसी प्रकार मसीह का नुज़ूल भी रूहानी नुज़ूल है जो एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से होगा जो मसीह की विशेषताओं से समानता रखता हो जैसा कि एलिया नबी के नुज़ूल के भावार्थ की व्याख्या नबियों की पुस्तकों में पहले की गई है।

और रहा उनका यह कथन कि हदीसें गवाही देती हैं कि ईसा दज्जाल का अपने हथियार से वध करेगा परंतु हम स्वीकार नहीं करते कि हदीसें इस पर सर्वसम्मति से दलालत करती हैं बल्कि वह हदीस जो बुख़ारी में ईसा के बारे में वर्णन हुई है अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन कि वह लड़ाई को स्थगित करेगा, स्पष्ट रूप से दलालत करती है कि ईसा दज्जाल का जंगी हथियारों में से किसी हथियार से वध नहीं करेगा और वह अपने हाथ में अपना हथियार कैसे पकड़ सकता है जबकि अल्लाह के रसूल ने उसके बारे में यह फ़रमाया है कि वह लड़ाई को स्थगित कर देगा। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि दज्जाल का वध करने का हथियार आसमान से उतारा जाने वाला आध्यात्मिक हथियार होगा जैसा कि इब्न अब्बास से मरवी हदीस इस पर अदालत करती है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा भाई ईसा इब्न मरियम अफीक नामक पहाड़ पर बतौरे महदी, पथप्रदर्शक और बतौर निर्णायक अवतरित होगा। उसके हाथ में एक हथियार होगा जिससे वह दज्जाल का वध करेगा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि यह हथियार आसमानी है न पार्थिव। तो वध भी अध्यात्मिक विषय है न कि शारीरिक। फिर जब दज्जाल अंतिम युग का शैतान है जो अपने द्योतकों पर गुमराही का साया फैलाएगा तो शारीरिक वध के क्या अर्थ? और उन्होंने वर्णन नहीं किया कि दज्जाल को उसके वध के बाद दफन किया जाएगा या जला दिया जाएगा या समुद्र में डाल दिया जाएगा या धरती पर फेंक दिया जाएगा ताकि पक्षी उसे खा जाएं। अत: यह समस्त अकाट्य तर्क हैं कि दज्जाल का वध एक अध्यात्मिक विषय है। और जान ले कि ईसा का वह हथियार जो उसके साथ आसमान से उतरेगा वह उसके सांस (अर्थात वाक् शक्ति) का हथियार है जिससे हर काफ़िर नष्ट हो जाएगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम बुद्धिमानों के समान विचार नहीं करते और तुम जान चुके हो कि दज्जाल शैतान है जैसा कि कुछ हदीसों में आया है। अत: इब्लीस के वध का हथियार सिवाए आध्यात्मिक हथियार के और कुछ नहीं। अत: जंग के स्थगन की हदीस सही है जो बुख़ारी में पाई जाती है और हर वह हदीस जो बुख़ारी

की विरोधी है या तो उसमें किसी रावी ने मिलावट की है या वह भावार्थ करने योग्य है। और जो इस बारे में बहस करता है वह इस हदीस को भूल गया है जो इस किताब में पाई जाती है जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे सही किताब है। और यही सच्चाई है और उसका इन्कार कोई मूर्ख लापरवाह व्यक्ति ही कर सकता है। अत: सोच विचार कर और जल्दबाज़ों में से न हो।

और जहां तक महदी के आगमन से जुड़ी हदीसों का संबंध है तो तू जानता है कि वह सब की सब कमज़ोर, मजरूह हैं और एक दूसरे की विरोधी हैं यहां तक कि इब्ने माजा और उसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तकों में एक हदीस आई है कि **لا مهدی الا عیسی ابن مریم** अर्थात ईसा बिन मरियम ही महदी होगा। तो किस प्रकार इन जैसी हदीसों पर भरोसा किया जा सकता है जिनमें अधिकता से परस्पर मतभेद, विरोधाभास और कमज़ोरी पाई जाती है और उनके रावियों में बहुत जिरह हुई है जैसा कि मुहद्दसीन को ज्ञात है।

सारांश यह कि यह समस्त हदीसें मतभेद और विरोधाभास से खाली नहीं तू इन सब से अलग रह और हदीसों के झगड़ों को क़ुरआन की ओर लौटा और क़ुरआन को उन पर निर्णायक बना ताकि तुझ पर हिदायत प्रकट हो और तू उन लोगों में से हो जाए जो सन्मार्ग प्राप्त हैं परंतु यदि तू हदीसों को उनके विरोधाभास, अत्यधिक मतभेद और उनके विश्वास के स्तर से गिरे हुए होने के बावजूद स्वीकार करता है तो तेरे लिए यह कहीं अधिक उचित होगा कि तू क़ुरआन को स्वीकार करें जो ऐसा अकाट्य और विश्वसनीय है कि झूठ न तो उसके सामने से आ सकता है और ना उसके पीछे से, अगर तू विश्वास के मार्ग का अनुसरण करना चाहता है।

और उनके आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति ईमान नहीं रखता कि (ईसा) मसीह परिंदों का पैदा करने वाला और मुर्दों को जीवित करने वाला और सम्मान में विशिष्ट तथा अद्वितीय और शैतान के स्पर्श से सुरक्षित था और उस विशेषता में नबियों में से कोई उसके समान नहीं है।

इस आरोप का उत्तर यह है कि तू जान ले कि हम (ईसा अलैहिस्सलाम के) मुर्दों के जीवित करने के चमत्कार तथा चमत्कार पूर्वक पैदा करने पर ईमान लाते हैं परन्तु हम उसे वास्तविक तौर से जीवित करने तथा वास्तविक तौर पर पैदा करना नहीं मानते जो अल्लाह के जीवित करने और अल्लाह के पैदा करने के समान हो। और यदि ऐसा होता तो पैदा करने और जीवित करने में समानता हो जाती हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि- فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ (आले इमरान-3/50)
(अर्थात वह अल्लाह के आदेश से परिंदा (अर्थात रूहानी परिंदा) बन जाएगा) और यह नहीं फ़रमाया कि- فَيَكُوْنُ حَيًّا بِاِذْنِ اللّٰهِ कि वह अल्लाह के आदेश से जीवित हो जाता था। और न ही यह कहा है कि- فَيَصِيْرُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ अर्थात वह अल्लाह के आदेश से पक्षी हो जाता है। निस्सन्देह ईसा के परिंदे का उदाहरण मूसा अलैहिस्सलाम के डंडे के समान है जो एक दौड़ने वाले सांप के समान प्रकट हुआ था परंतु उसने हमेशा के लिए अपनी पहली अवस्था को नहीं छोड़ा था और इसी प्रकार तहक़ीक़ करने वालों ने कहा है कि ईसा का पक्षी लोगों की आंखों के सामने उड़ता था और जब वह आंखों से ओझल हो जाता तो

गिर पड़ता और फिर अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता था। तो उसे वास्तविक जीवन कहां प्राप्त हुआ? और मुर्दे जीवित करने की वास्तविकता भी कुछ ऐसी ही थी अर्थात् उसने मुर्दे को पूर्णत: जीवित नहीं किया बल्कि मुर्दे के जीवन का जलवा आपकी पवित्र रूह के प्रभाव के कारण दिखाई देता था और मुर्दा उस समय तक जीवित रहता था जब तक ईसा उसके पास खड़े या बैठे रहते परंतु जब वह चले जाते तो मुर्दा अपनी प्रथम अवस्था में लौट आता और मर जाता। अत: यह जीवित करना चमत्कारिक था न कि वास्तविक और अल्लाह जानता है कि यही वास्तविक सच्चाई है इसमें लोगों के गलत बयानों की मिलावट हुई है और उन्होंने जो चाहा उस में बढ़ोतरी कर दी। जैसा कि हर ऐसे व्यक्ति पर यह बात छुपी नहीं जिसे तनिक भर भी ज्ञान और विवेक प्राप्त है। अत: आयतों के भाव और उनके अर्थ ज्ञात करने में गंभीर चिंतन कर ताकि तुझसे गुमराही और अंधकार दूर हो जाएं और तू विवेकवान लोगों में से हो जाए।

और उनका एक ऐतराज़ एक यह भी है कि वे कहते हैं कि अल्लाह ने क़यामत के निकट मसीह के अवतरण की सूचना दी है जैसा कि उसने फ़रमाया - وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ (अर्थात- और वह अन्तिम घड़ी का ज्ञान प्रदान करता है-(ज़ुखरुफ - 43/62))

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि अल्लाह ने وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ फ़रमाया है وَ اِنَّهٗ سَيَكُوۡنُ عِلۡمًا لِّلسَّاعَةِ नहीं फ़रमाया। अत: यह आयत ददालत करती है कि वह एक दृष्टिकोण से क़यामत का निशान थे जो उन्हें व्यवहारिक रूप से प्राप्त था न कि उन्हें बाद के किसी समय में प्राप्त होना था। और वह प्राप्त पहलू उनका बिना बाप के जन्म था। और इसका विवरण यह है कि यहूदियों का एक संप्रदाय अर्थात सदूकी क़यामत के अस्तित्व के इन्कारी थे। तो अल्लाह ने उन्हें कुछ नबियों के द्वारा ख़बर दी कि उनकी क़ौम से एक लड़का बिना बाप के पैदा होगा। और वह उनके लिए क़यामत के अस्तित्व पर एक निशान होगा। अत: उसने आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ में इसी की ओर संकेत किया है और इसी प्रकार इस आयत وَ لِنَجۡعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ (अनुवाद- ताकि हम उसे लोगों के लिए निशान बनाएं। मरियम- 19/22) में भी संकेत है अर्थात हम उसे लोगों (अर्थात सदूकियों) के लिए निशान बनाएंगे।

और कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ का सर्वनाम क़ुरआन की ओर लौटता है। अत: क़ुरआन ने बहुत सी सृष्टि को जीवित किया और उन्हें क़ब्रों से उठाया है। अत: यह रूहानी तौर पर उठाया जाना दलील है शारीरिक रूप से उठाए जाने पर अर्थात क़यामत पर जैसा कि "मआलिमुत्तन्ज़ील" आदि में है। तो सारांश यह है कि आयत وَ اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ मसीह के अवतरण पर बिल्कुल दलालत नहीं करती बल्कि वह इन्कार करने वालों का मुंह एक मौजूद प्रमाणित दलील से बंद करती है। इसीलिए अल्लाह ने "फला तमतरुन्ना बिहा" फरमाया है। और किसी ऐसे कथन को निशान नहीं कहा जा सकता जिसका बाद में अस्तित्व ही सिद्ध न हो और जिसे विरोधियों में से किसी ने भी न देखा हो।

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि अगर यह वही मसीह है जो सलीब तोड़ने तथा सूअरों का वध करने के लिए भेजा गया है तो उस पर शताब्दी के आरंभ से 11 वर्ष बीत चुके हैं तो कौन सी सलीब तोड़ी गई और कौन से सूअर का वध किया गया? और कौन सा टैक्स हटाया गया

और कौन है जिसने काफ़िरों के मार्गों को छोड़ा और इस्लाम में प्रवेश किया?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि सच्चाई (का प्रभुत्व) यकायक नहीं आया करता बल्कि धीरे-धीरे आता है और ऐनी (उमदतुलक़ारी फी शरहिल बुख़ारी) में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि ईसा अलैहिस्सलाम 19 साल रहेंगे। और वह न तो अमीर होंगे, न निर्णायक और न ही राजा। और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मक्का में 13 साल का समय बीता और इस अवधि में आपके साथ कमज़ोरों का केवल एक छोटा सा समूह सम्मिलित हुआ था। और तौरात में लिखी हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुछ निशानियों में से रोम, सीरिया और फारस के इलाकों का विजय होना था, परंतु यह (विजय) लोगों ने आपके जीवनकाल में नहीं देखी और न ही क़ौमों तथा देशों के बड़े-बड़े समूहों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद आपका अनुसरण किया। बल्कि आप ने अपने प्रारंभिक समय में मुसीबतों पर मुसीबतों के सिवा कुछ नहीं देखा और जो लोग आप पर ईमान लाते थे उन्हें भी क़ौम ने बहुत कष्ट दिए। उन पर आरोप लगाए, उन्हें धुत्कारा और उनके विरुद्ध झूठ बोलते हुए हर प्रकार की उपद्रवपूर्ण बातें की और इसी प्रकार समस्त नबी धुत्कारे गए और उनको उनके जीवनकाल के प्रारंभ में दुख और कष्ट पहुंचे और इस कठिनाई पर एक लंबा समय बीत गया यहां तक कि वे "मता नसरुल्लाह" (अर्थात अल्लाह की सहायता हमारे पास कब आएगी) पुकार उठे। फिर (ऐसा हुआ कि) जो नष्ट होने वालों में से थे वे नष्ट हो गए जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया -

اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ وَ لَمَّا يَاۡتِكُمۡ مَّثَلُ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ ؕ مَسَّتۡهُمُ الۡبَاۡسَآءُ وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلۡزِلُوۡا حَتّٰى يَقُوۡلَ الرَّسُوۡلُ وَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ مَتٰى نَصۡرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصۡرَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ ۔

(अल बक़र: - 2/215)

(अनुवाद- क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में प्रवेश कर जाओगे जबकि अभी तक तुम पर उन लोगों जैसे हालात नहीं आए जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। उन्हें कठिनाइयां और कष्ट पहुंचे और वह हिला कर रख दिए गए यहां तक कि रसूल और वे जो उसके साथ ईमान लाए थे, पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आएगी। अल बक़र: - 2/215) इसी प्रकार इस समय के लोग चाहते हैं कि मेरा वध करें या मुझे सूली पर लटका दें या मुझे किसी अंधे कुएं में डाल दें और सच्चाई को अपने पैरों तले रौंद डालें। और हरे-भरे वृक्षों को उसी प्रकार जला दें जैसे सूखी घास को जला दिया जाता है। तो अल्लाह ही है जिससे उनके षड्यंत्रों के विरुद्ध सहायता मांगी जा सकती है और वही सबसे श्रेष्ठ सहायता करने वाला है। और उसकी वह सहायता जिसका वे इन्कार करते हैं, वह एक ऐसी चीज़ है कि शीघ्र ही तू वह कुछ देखेगा जिसे तू सुनता नहीं, बल्कि उसकी निशानियां देखने वालों की निगाहों में प्रकट हो गई हैं।

क्या तू नहीं देखता कि ज़माना कैसे एकेश्वरवाद की ओर पलट गया है और किस तरह इस्लाम की हवाएं मुश्रिकों के देशों में चल पड़ी हैं और किस प्रकार लोग अल्लाह के धर्म में हर देश से फौज की फौज प्रवेश कर रहे हैं। अत: यह वही नूर है जो आसमान से उस व्यक्ति के साथ उतरा जो लोगों

के सुधार के लिए अवतरित किया गया। यदि तू इंसाफ करने वालों में से है तो बता कि इससे अधिक स्पष्ट दलील और कौन सी हो सकती है? हे नादान! उठ और आंख खोल ताकि तू देखे कि आसमानी हथियार से किस प्रकार सलीब तोड़ी जा रही है और सूअरों का वध किया जा रहा है। जहां तक लोगों को इस संसार के हथियारों से मारने का संबंध है तो यह कोई विचित्र बात नहीं। क्या राजा ऐसा नहीं किया करते? अत: तू अल्लाह के हथियार को तलाश कर और इन्कार करने वालों में से न बन।

और मैंने अभी वर्णन किया है कि दज्जाल ही शैतान होगा जो उन लोगों के दिलों में भ्रम उत्पन्न करेगा जो उसका अनुसरण करेंगे। अत: इस प्रकार वह उसके लिए उसके सहायक बन जाएंगे और उनका कर्म उस शैतान का कर्म हो जाएगा। तब उस ज़माने में मसीह मौऊद आकाशीय हथियार के साथ अवतरित होगा। फिर वह शैतान का वध करेगा और उसके सूअरों का भी वध करेगा और क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर इस की ओर संकेत किया है और यह भी संकेत किया है कि वह अंतिम युग में विजय प्राप्त करेगा। तो जिन लोगों पर शैतान अवतरित होगा वह धरती में उपद्रवी बनकर उपद्रव करेंगे और हर ऊंचाई को फलांगेंगे। फिर अल्लाह अपने बन्दों को आकाशीय बिगुल फूंक कर सच्ची बात पर इकट्ठा करेगा और यह रब्बुल आलमीन की ओर से निर्धारित नियति है।

यह अल्लाह तआला के भेदों में से एक भेद और उसकी सुन्नतों में से एक सुन्नत है कि जब वह लोगों के दिलों पर शैतानी प्रभुत्व के समय उनके सुधार का इरादा करता है तो वह रुहुल क़ुदुस (जिब्राईल) को अपने बंदों में से एक बंदे के दिल पर उतारता है और उसके साथ फ़रिश्ते होते हैं। अत: फ़रिश्ते हर ओर से उतरते हैं और उसके बन्दों को यह वह्यी करते हैं कि उठो और सच्चाई को स्वीकार करो। फिर वह उनके पास आते हैं और उन्हें सच्चाई को स्वीकार करने और कठिनाइयों को बर्दाश्त करने का सामर्थ्य देते हैं। और यह तहरीकें केवल किसी रसूल, नबी या मुहद्दस के प्रादुर्भाव के समय ही प्रकट होती हैं। परंतु मूर्ख लोग इस भेद को नहीं पहचानते जिससे हिदायत की हवाएं चलती हैं और उसके बारे में ठोकर खाते हैं और उन्हें संयोग समझते हैं और इस बात पर विचार-विमर्श नहीं करते कि अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक कारण बनाया है और इस संसार मैं प्रत्येक सक्रिय चीज़ के लिए कोई प्रेरक है। ये वही लोग हैं जिनके प्रयत्न इस सांसारिक जीवन में व्यर्थ गए और वे सतही विचारों पर प्रसन्न हुए और विचार-विमर्श करने वालों में से न हुए।

और वास्तविकता यह है कि फ़रिश्ते का मनुष्य के दिल के साथ एक गहरा संबंध होता है और शैतानों का भी संबंध होता है। अत: जब अल्लाह किसी नबी या रसूल या मुहद्दस को सुधारक बनाकर अवतरित करने का इरादा करता है तो वह फ़रिश्ते के संबंध को मज़बूती देता है और लोगों की योग्यताओं को सत्य के स्वीकार करने के निकट कर देता है और उनको बुद्धि, विवेक, साहस और कठिनाइयां सहन करने की शक्ति और क़ुरआन की समझ का नूर प्रदान करता है जो उस सुधारक के प्रादुर्भाव से पूर्व उन्हें उपलब्ध नहीं होता। अत: दिमाग साफ हो जाते हैं और बुद्धि मज़बूत हो जाती हैं और साहस बुलंद हो जाते हैं और हर एक ऐसा आभास करता है कि मानो उसे उसकी नींद से जगा दिया गया है। और उसके

दिल पर परोक्ष से नूर उतर रहा है और एक उपदेशक उसके अंतर्मन में खड़ा हो गया है। और लोग ऐसे हो जाते हैं कि मानो अल्लाह ने उनके स्वभाव और मिजाज़ को बदल डाला है और उनके दिमाग़ तथा विचारों को तेज़ कर दिया है। अत: जब यह सब लक्षण प्रकट और इकट्ठे हो जाएं तो वह इस बात की अकाट्य दलील होती है कि मुजद्दिद-ए-आज़म प्रकट हो गया है और अवतरित होने वाला नूर उतर चुका है। और इसी की ओर अल्लाह तआला ने सूर: क़द्र में संकेत फ़रमाया है -

اِنَّآ اَنۡزَلۡنٰهُ فِىۡ لَيۡلَةِ الۡقَدۡرِ ۚ وَ مَآ اَدۡرٰٮكَ مَا لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ؕ لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ؕ
تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوۡحُ فِيۡهَا بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۙ سَلٰمٌ ۛؕ هِىَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ۔

(अल क़दर - 97/2-6)

(अनुवाद- निश्चय ही हमने उसे क़द्र (नियति) की रात में उतारा है और तुम्हें क्या समझाएं कि क़द्र (नियति) की रात क्या है? क़द्र (नियति) की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। बहुत से फ़रिश्ते और पवित्र आत्मा अपने रब की आज्ञा से उसमें उतरते हैं। हर मामले में, शांति है। यह (श्रृंखला) भोर तक जारी रहती है।)

और तू जानता है कि फ़रिश्ते और जिब्राईल केवल सच्चाई के साथ ही उतरते हैं और अल्लाह की शान इससे बुलंद है कि वह उन्हें निरर्थक और बेफायदा भेजे। अत: जिब्राईल के भेजने से यहां किसी नबी या रसूल या मुहद्दस के अवतरण की ओर संकेत है कि यह रूह उस पर डाली जाती है और फ़रिश्तों के भेजने से ऐसे फ़रिश्तों के उतरने की ओर संकेत है जो लोगों को सच्चाई, हिदायत, दृढ़ता और डटे रहने की ओर प्रेरित करते हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया है-

اِذۡ يُوۡحِىۡ رَبُّكَ اِلَى الۡمَلٰٓئِكَةِ اَنِّىۡ مَعَكُمۡ فَثَبِّتُوا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

(अनुवाद- (याद कर) जब तेरा रब फ़रिश्तों की ओर वह्यी कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अत: तुम उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, दृढ़ता प्रदान करो। (अंफाल- 8/13) अर्थात तुम उनके दिलों में उतरो और उनके लिए ईमान, दृढ़ता और डटे रहने को प्रिय बना दो। और जब फ़रिश्ते उतरते हैं तो उनका यही कर्म होता है। अत: सूरत क़द्र में इस ओर संकेत है कि अल्लाह ने इस उम्मत से वादा किया है कि वह उन्हें व्यर्थ नहीं जाने देगा बल्कि जब भी वह गुमराह हो जाएंगे और अंधेरों में गिर जाएंगे तो लैलतुल क़द्र उन पर आएगी और रूहुल कुदुस (जिब्राईल) धरती पर उतरेगा अर्थात अल्लाह उसे अपने बंदों में से जिस पर चाहेगा उतारेगा और उस बंदे को मुजद्दिद बनाकर अवतरित करेगा और जिब्राईल के साथ अन्य फ़रिश्तों को भी उतारेगा जो लोगों के दिलों को सच्चाई और हिदायत की ओर प्रेरित करेंगे। फिर यह सिलसिला क़यामत तक निरंतर चलता रहेगा। अत: तलाश करो तो पा लोगे और खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। और यह ज़माना वह है कि जिस में शारीरिक नेमतों और नई उन्नतियों के द्वार खुल गए हैं। और तुम अपनी सवारियों, अपने वस्त्रों में और अपनी सभ्यता के विभिन्न प्रकारों में नई-नई नेमतें देख रहे हो और भौतिक विज्ञान, गणित और मनोविज्ञान के बहुत से सूक्ष्म ज्ञान प्रकट हो चुके हैं और हम दुनिया वालों को आधुनिक विज्ञान में इसी प्रकार उन्नति करते पाते हैं कि मानो वे आसमान की तरफ बुलंद हो रहे हैं और

ऐसी चीज़ें देख रहे हैं कि जिन से बुद्धि चकित रह जाती हैं। और उल्लेख (उद्धरण) उससे पीछे रह जाते हैं। और हम हर ओर नए आविष्कार और नई कलाएं और अजीब और जटिल कार्य खुले-खुले जादू के समान देखते हैं। और हम इन आविष्कारों का कोई निशान पहले लोगों में नहीं पाते, मानो धरती किसी और धरती से बदल गई है। और जब यह सिद्ध हो गया कि धरती में आधुनिक विज्ञान और नए-नए अध्यात्मज्ञान छुपे हुए हैं और अल्लाह ने सांसारिक ज्ञान के पर्दों को अपनी क़ुदरत से फाड़ दिया है तो फिर तू आसमान के फट जाने पर क्यों आश्चर्य करता है। और मेरे रब ने मुझे इल्हाम किया है और फ़रमाया है कि - اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا अर्थात आसमान और धरती दोनों बंद थे, तो हमने इन दोनों को खोल दिया फिर तू इस भेद को समझ और रब्बुल आलमीन (समस्त ब्रह्मांड के रब) की रहमत से निराश न हो।

और तू देख रहा है कि इस ज़माने के निम्न से निम्न असहाय व्यक्ति को भी वह नेमतें उपलब्ध हैं जो उसके बाप-दादों में से किसी ने बल्कि पहले राजाओं और (हज़रत) सुलेमान ने भी समस्त शानो शोकत के बावजूद नहीं देखी थीं। अत: जब अल्लाह ने अपनी भौतिक नेमतों के साथ अपने बंदों पर उपकार किया है तो तुम कैसे समझते हो कि उसने उन्हें अपनी आध्यात्मिक नेमतों से वंचित रखा होगा। अत: तू इस पर खूब विचार कर जो हमने तुझे विस्तार पूर्वक बताया है और अल्लाह तथा अल्लाह वालों से क्षमा याचना कर यदि तू परहेज़गारों में से है। अत: हे जल्दबाज़ो! सब्र करो यहां तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उन उपद्रवों की ओर नहीं देखते जो तुम्हारे बीच बहुत बढ़ गए हैं और अल्लाह मोमिनों को उनके इस हाल पर जिस हाल पर वे अब हैं, छोड़ने वाला नहीं है यहां तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग कर दे। अत: तुम ख़ुदा के दिनों के आने से निराश न हो क्योंकि वह सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

और उनका एक ऐतराज़ यह है कि वे कहते हैं कि औलिया दावा नहीं किया करते और न यह कहते हैं कि हम यह हैं और वह हैं बल्कि उनके हालात और उनकी चाल-ढाल स्वयं उनके औलिया होने पर दलालत करती है। इसलिए ऐसा व्यक्ति जो दावा करे वह वलीउल्लाह नहीं होता बल्कि निस्सन्देह झूठों में से होता है।

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि पहले और बाद में आने वाले इमामों ने विलायत के इज़हार को **तह्दीस-ए-नेमत** (अल्लाह के उपकार की चर्चा करने) के तौर पर जाइज़ क़रार दिया है। और शैख़ (अब्दुल क़ादिर) जीलानी और मुजद्दिद (अहमद) सरहिन्दी की पुस्तकें इससे भरी पड़ी हैं। और अल्लाह तआला ने وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ फ़रमाया है (अर्थात- हर एक नेमत जो ख़ुदा से तुझे मिले उसको लोगों के समक्ष वर्णन कर। (ज़ुहा- 93/12) और इब्ने जरीर ने अपनी व्याख्या में अबू युसरा गफ़्फ़ारी से रिवायत की है कि सहाबा किराम धन्यवाद करने को केवल धन्यवाद के इज़हार की शर्त के साथ ही धन्यवाद करना मानते थे क्योंकि ख़ुदा का आदेश है-

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (इब्राहीम- 14/8)

(अनुवाद- अगर तुम मेरा धन्यवाद करोगे तो मैं अपनी दी हुई नेमत को और बढ़ाऊंगा और यदि अहसान फ़रामोशी करोगे तो मेरा अज़ाब बहुत कठोर है। और देलमी ने (अपनी किताब) 'फिरदोस' में और अबू नईम ने अपनी किताब 'हिल्यतुल ओलिया' में रिवायत की है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब मिंबर पर चढ़े और फ़रमाया कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह को शोभानीय हैं जिसने मुझे ऐसा बनाया कि मुझसे बढ़कर इस समय कोई दूसरा नहीं। इस पर लोगों ने आपसे इस कथन के बारे में पूछा। तो आपने फ़रमाया कि मैंने यह केवल अल्लाह तआला की नेमत के धन्यवाद के तौर पर कहा है और यह जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है فَلَا تُزَكُّوٓا اَنفُسَكُمۡ (अनुवाद- तुम अपने आप को पवित्र मत कहो। (अन्नजम- 53/33) तो स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत का इज़हार के बीच अंतर है, यद्यपि यह दोनों बाहरी रूप से देखने में सामान लगते हैं। तो जब तू किसी विशेषता को अपनी ओर मंसूब करे और स्वयं को कुछ समझने लगे और तू उस स्रष्टा को भूल जाए जिसने तुझ पर उपकार किया तो यह स्वयं को पवित्र ठहराना है। परंतु जब तू अपने गुणों को अपने रब की ओर मंसूब करे और हर नेमत को उसकी ओर से समझे और गुण को देखते समय स्वयं को न देखे बल्कि हर तरफ अल्लाह की ताकत और शक्ति और उसके उपकार और कृपा देखे और अपने आपको एक ऐसे मुर्दे के समान समझे जो मृतस्नापक (नहलाने वाले) के हाथ में हो (जिसका स्वयं पर कोई वश नहीं चलता) और तू स्वयं की ओर कोई विशेषता मंसूब न करे, तो यह नेमत का इज़हार है। अत: जिन लोगों के दिलों में बीमारी है वह जल्दी से ऐतराज़ करने की ओर भागते हैं और वह शुक्रगुज़ार अवतारों तथा झूठे दिखावा करने वालों के बीच अंतर नहीं करते और इस प्रकार उन दोनों (अर्थात स्वयं को पवित्र ठहराने और नेमत के इज़हार) के एक जैसे होने की वजह से मामला उन पर संदिग्ध हो जाता है। उनके ऐतराज़ों के उत्तर में यह हमारा अंतिम कथन है और अल्लाह हमारे तथा उनके बीच निर्णय करेगा और वह बेहतर निर्णय करने वाला है। (हमामतुल बुश्रा (हिन्दी) पृष्ठ- 197-212)

☆ ☆ ☆

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:-

''सच्चाई ग्रहण करो! सच्चाई ग्रहण करो!! क्योंकि वह (ख़ुदा) देख रहा है कि तुम्हारे हृदय कैसे हैं! क्या मनुष्य उसको भी धोखा दे सकता है? क्या उसके सम्मुख भी छल प्रपंच और मक्कारियाँ चलती हैं?

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम भाग -2 पृष्ठ-549)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ (النحل ۱۱)

Prop : Sk. Ishaque

FFT Fruits

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS

All India Truck Supplier

Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal flipkart amazon.com paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also

Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu
Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt,
Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

'''तौहीद एक नूर है जो बाह्य एवं आन्तरिक (भौतिक) उपास्यों की समाप्ती के पश्चात् हृदय में पैदा होता है और भक्त के अस्तित्व के रोम-रोम में समा जाता है। अस्तु, वह बिना ख़ुदा और उसके रसूल के द्वारा मनुष्य अपनी शक्ति से किस प्रकार प्राप्त कर सकता है? मनुष्य का केवल यह कार्य है कि अपने अहंकार मार दे और राक्षसीय घमण्डों को त्याग दे कि मैं महाज्ञानी और बड़ा विद्वान हूँ और अपने आप को एक अज्ञानी की तरह समझ ले और दुआ में लगा रहे। तब तौहीद का नूर ख़ुदा की तरफ से उस पर प्रकट होगा और एक नया जीवन उसे प्रदान करेगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-22, हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-148)

☆ ☆ ☆